AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 04 | Issue 12 | December 2023 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 10-13

भारत में क्षेत्रीय दलों की सरकारें : 2000 से वर्तमान तक के विशेष संदर्भ में

डॉ. प्रेमवीर गोदारा
सहायक प्रोफेसर - राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख (चूरू), राजस्थान

सारांश :-

भारतीय राजनीति के निर्धारित तत्वों में एक महत्वपूर्ण आयाम भारत के राजनीतिक परिदृश्य में दलीय व्यवस्था का स्वरूप है। भारत के संविधान के अनुसार भारत में संघीय व्यवस्था है जिस में नयी दिल्ली में केन्द्र सरकार तथा विभिन्न न राज्यों व केन्द्र शासित राज्यों के लिए राज्य सरकार है। इसलिए, भारत में राष्ट्रीय व राज्य क्षेत्रीय), राजनीतिक दलों का वर्गीकरण उनके क्षेत्र में उनके प्रभाव के अनुसार किया जाता है। भारत में बहुदलीय प्रणाली बहु-दलीय पार्टी व्यवस्था है जिसमें छोटे क्षेत्रीय दल अधिक प्रबल हैं। राष्ट्रीय पार्टियां वे हैं जो चार या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त हैं। उन्हें यह अधिकार भारत के चुनाव आयोग द्वारा दिया जाता है, जो विभिन्न राज्यों में समय समय पर चुनाव परिणामों की समीक्षा करता है। भारत के बहुमापीय, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक ढ़ाँधे में बहुबलीय शासन व्यवस्था उपस्थित है, जिसमें राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय दलों ने अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन किया है।

मुख्य शब्द:- लोकतन्त्रात्मक , मानव सम्यता, स्वाधीनता, जनतन्त्र, अल्पमती, दल और संसद, विपक्ष, सत्तारूढ़, राजनीतिक, अपराधीकरण, विधानमंडल, अस्थिरता

प्रस्तावना:-

भारत में राजनीतिक दलों का उद्भव एवं विकास एवं उभरते राजनीतिक दलों का भारतीय राजनीति में सामाजिक सुधार प्रारम्भ में राजनीतिक दलों का मुख्य उद्देश्य था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रकृति राष्ट्रीय आंदोलन को देने वाले एक संगठन की थी, जिसने देश में अंग्रेजों के शासन के विरूद्ध संघर्ष कर देश की स्वतंत्रता का लक्ष्य रखा। कालान्तर में विचारधारा की विभिन्नता के आधार पर कांग्रेस से अनेक शाखाएं प्रशाखाएं प्ररफूटित हुई ।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Premveer Godara Assistant Professor-Dept. of Polirical Science, Government College Sidhmukh Churu, Rajasthan Email: dr.premveergodara@gmail.com	

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय में राष्ट्रीय स्तर के दो प्रमुख राजनीतिक 'दल-भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा साम्यवादी दल थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के वाद 1967 तक भारत के एकदलीय व्यवस्था वाला देश कहा जाता था किन्तु रजनी कोठारी के अनुसार "भारतीय राजनीति के एक दल की प्रधानता वाली स्थिति से निकलकर उस स्थिति थिति में प्रवेश किया, जिसमें विभिन्न दलों में प्रधानता प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता प्रारम्भ हो गई ।" पूर्व में राष्ट्रीय कांग्रेस सामाजिक संगठन के रूप में भूमिका निर्वहन करने की इच्छुक थे। किन्तु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वतंत्रता के पश्चात अपने मध्यमवर्गीय विचारधारा अपनाने से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सशक्त कांग्रेस कं इस समदर्शी एवं बहुआयाम के कारण प्रतिस्पर्धी दलों को समर्थन कम मिला और उनकी राजनीति में सीमित भूमिका थी । साम्यवादी दल का सीमित रूप से प्रभाव था। स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारम्भिक रूप से गठित कुछ राजनीतिक दलों का गठन हुआ।

जयप्रकाश नारायण द्वारा भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना तथा 1957 में डॉ. श्यागाप्रसाद मुखर्जी द्वारा जनसंघ, आचार्ग कृपालानी का किसान मजदूर पार्टी (1952 में भारतीय साम्यवादी दल तथा किसान मजदूर पार्टी के विलय के फलस्वरूप प्रथा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) का जन्म हुआ)

1959 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रेरणा से स्वतंत्र पार्टी की स्थापना हुई | 1957 के आम चुनावों से पूर्व कांग्रेस से विद्रोह कर कांग्रेसजनों ने राज्य स्तरीय दलों की स्थापना की, जिनमें भारतीय क्रान्तिदल, बंगाल कांग्रेस, जन कांग्रेस प्रमुख थे। फलस्वरूप राज्य स्तर पर गैर कांग्रेस राजनीतिक दलों ने राज्य स्तरीय दलों के रूप में पप्टनान कायग की| 1969 में कांग्रेस का दो भागों में पिभाजन हुआ। संगठन कांग्रेस (पुरानी कांग्रेस जिसके नेता कामराज, मोरारजी देसाई एवं निजलिंगप्पा थे तथा नवीन कांग्रेस (श्रीमति गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस)।

1971 में रवतंत्र पार्टी, जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी एवं संगठन कांग्रेस द्वारा इन्दिरा गांधी को पराजित करने के लिए निर्मित गहागठवंधन की सफलता प्राप्त हुई। 1974 में भारतीय लोकदल का उदय था, सिसमें भारतीय क्रान्ति दल के अलावा शवंत्र पार्टी (पीलू नोदी गुट), किसान मजदूर पार्टी (चांदराग) उत्कल कॉग्रेज (वीजू पटनायक), संधुक्त सोशलिरत पार्टी (राजनारासणी, पंजाब खेतीवाड़ी जमीदारी यूनियन (वाबा महेन्द्रारोंह) जैसे दल शामिल थे। आपातकाल में 1977 मैं जनता पार्टी अरितत्व में आयी, जिसमें कांग्रेस के चथिकल्प के इच्छुक गैर साम्यतादी दल (संग उन कांग्रेस, जमरंघ, भारतीय लोकचल एवं समाजवादी दल) शामिल थे। कांग्रेस से त्यागपत्र देकर जगजीवनराम के नेतृत्व में गठित "लोकतांत्रिक कांग्रेस" ने जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का निश्चय किया।

डॉ. पुखराज जैन व बी.एल फड़िया द्वारा लिखित "भारतीय शासन वे राजनीति" साहित्य भवन पब्लिकेशन, 1998 इस पुस्तक में रामय-समय पर होने वाले विभिन्न लोकसभा चुनावों में विभिन्न दलों की भूमिका, राष्ट्रीय दलों का एक संक्षिप्त अध्ययन है, डी.सी. गुप्ता, द्वारा लिखित भारतीय शासन और राजनीति, विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा.लि, नई किताब 1977 दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिक शास्त्र विभाग के डीसी. गुप्ता ने अपनी रचना भारतीय शासन व्यवस्थ से पहले व विग्रह के बाद के राजनीतिक दलों की चर्चा भी करती है।

अस्थिरता के लिए जो कारक उत्तरदायी रहे उनका अध्ययन करती है। परंतु इसका अध्ययन केवल 8 भारतीय राज्यों, बिहार, हरियाणा, केरल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल तक सीमित रहा।

भारत देश में राजनीतिक दल-जनता व सरकार के बीच की कड़ी के रूप में यह शजात किया गया है कि भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दल किस प्रकार से उत्पन्न हुए उनका इतिहास कैसा रहा साथ ही भारत के परिप्रेक्ष्य मे राजनीतिक दल जनता व सरकार के मध्य एक कड़ी का कार्य करते हैं . ये क्षेत्रीय दल एक मध्यस्थता का कार्य करते हैं साथ ही एक छोटे से समाज से निर्मित राजनीतिक दल एक बड़ा रुप समाज के सहयोग से धारण करता है. सरकार बनाकर शासन सत्ता सम्मालते हैं इस प्रकार यह कहना उचित ही नहीं बल्कि पूर्णतः: सत्य है कि राजनीतिक दल जनता व सरकार के मध्य सक्रिय भूमिका निभाते हैं जो कि जनता व सरकार को जोड़ने का कार्य है जिससे यह प्रमाणित होता है कि राजनीतिक दल जनता व सरकार के बीच की कड़ी है।स्वतंत्रता के पश्चात केन्द्र में कांग्रेस के एकंमात्र शासन का पटाक्षेप 1977 में जनता पार्टी की विजय से हुआ। किन्तु जनता पार्टी का विभाजन हुआ। केन्द्र की गैर कांग्रेस सरकार अल्पकालिक रही। 1980 में जनसंघ के पुनर्गठन के रूप में भारतीय जनता पार्टी का गठननीय दलों के गहत्व एवं भूगिका में किया गया। 1984 के लोकसभा चुनावों में तेलगुदेशम जैसा राज्य स्तरीय दल लोकतंत्र में दूसरा सबसे बड़ा दल था। 1987 के पश्चात् कांग्रेस (इ) का विकल्प खड़ा करने के लिए चौधरी देवीलाल से "जनता दल" का गठन हुआ। जानता दल ने कालान्तर में गैर साम्यवादी विपक्षी दलों के साथ मिलकर 1988 में राष्ट्रीय मोर्चे का गठन किया।

1990 में भारतीय जानता पार्टी द्वारा समर्थन वापस लेने से इस सरकार का पत्तन हुआ। नवम्बर, 1990 से 1999 के मध्य जनता दल के विभाजन के पश्चात् जनता पार्टी सबसे व दल के रूप में सामने आई | किन्तु इसी समय तीसरे मोर्चे का गठन हुआ, जिसमें राष्ट्रीय मोर्चा एवं वामपंथी मोर्चे और कतिपय राज्य स्तरीय दल शामिल थे। 80 एवं 90 के दशक में अनेक क्षेत्रीय दलों ने प्रमुखता ग्रहण की। भारतीय संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की विशिष्ट भूमिका है। भारत एक बहु दलीय व्यवस्था वाला देश है। यहाँ अनेक राष्ट्रीय एवं स्तरीय दलों का अस्तित्व रहा है। राजनीतिक दल लोकमत के निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते हैं। किसी भी अन्य 'लोकतंत्र की तरह, राजनीतिक दल भारतीय समाज के बीच विभिन्न न क्षेत्रों और - धर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके बुनियादी मूल्य भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | कार्यकारी शाखा और सरकार की विधायी शाखा दोनों राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के माध्यम से चलाए जाते हैं।

भारत में राजनीतिक दलों का उद्भव एवं विकास राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा हुआ है। उननीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में अनेक राष्ट्रवादी स्थानीय संगठन चुने होने मर भी स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रभावकारी दलों के संगठन की आवश्यकता महसूस हुई थी। सन्1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस का राजनीतिक दल के रूप में उदय हुआ जिसने राष्ट्रीय चेतना के उदय तथा राष्ट्रीय आंदोलन के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उपसंहार:-

केन्द्र में गठबन्धन सरकार राष्ट्रीय संकट के समय भी बनाई जा सकती हैं (उदाहरण के लिये, युद्ध या आर्थिक संकट के दौरान), जो सरकार को उच्च स्तर की राजनीतिक औचित्यपूर्ण या सामूहिक पहचान दे सकती हैं, जो उसे चाहिये

व साथ ही आन्तरिक राजनीतिक विग्रह को कम करने में भी भूमिका निभा सकती हैं। ऐसे समय में, दलों ने "सर्वदलीय गठबन्धन" (राष्ट्रीय एकता सरकारें, महागठबंधन) बनायें हैं। यदि कोई गठबन्धन गिर जाता हैं, तो एक विश्वास मत होता हैं या अविश्वास प्रस्ताव लिया जाता हैं।

गठबंधन सरकार के कई दोष भी है। जैसे राष्ट्रीयता की भावना की कमी तथा क्षेत्रियता की वृद्धि होती है। भ्रष्टाचार की वृद्धि होती है। नीतियों के बदलने पर दबाव की लगातार बाध्यता होती है तथा अलग-अलग दलों में सैद्धांतिक आदर्शों में मतभेद एवं प्रधानमंत्री के विशेषाधिकारों का हनन भी होता हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. सिंहल सुरेश चन्द्र, तुलनात्मक राजनीतिक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा
2. कुमार, अरूण, आन कोलीशन कोर्स ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998
3. चक्रवर्ती, विद्युत्त, कॉलोशन पॉलिटिक्स इन झण्डिया ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2074
4. चौहान, रजिन्दर सिंह, अरोरा, दिनेश एवं वासुदेव शैलजा, कॉलीशन गवर्नमिन्ट / आब्लस्स एण्ठ आस्पेक्ट्स दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2064
5. राम, डा. डी. सुन्दर, कोलीशन पॉलिटिक्स इन इण्डिया सर्च फॉर पॉलिटिकल स्टेकिलिटी: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2000
6. शर्मा, सुमन, स्टेट वाउनट्री चोन्ज़ेज इन ड्ण्डिया/काम्स्टीट्यूशनल प्रोकिजिन एण्ड कान्सिक्वेन्शेज दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन दिल्ली, 1995
7. कश्यप, सुभाप सी, कॉलीशन गवर्नमेन्ट एण्ड वॉलिटिक्स इन झ्ण्डिया उत्पल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1997
8. गहलोत, एन. एस. न्यू चैंलेन्जेज टू झइण्डियन पॉलिटिक्स डीप एण्ड डीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002
9. सिंह, होशेर सिंह, माथुर, पी. सी. एण्ड सिंह पंकज, कॉलीशन गवर्मिन्ट एण्ल गुड गवर्नेन्स अलख पतब्लि्शस, जयपुर, 2007
10. चक्रबर्ती, विचुत्त, कॉलोशन पॉलिटिक्स इन ड्ण्डिया ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2074
11. माहेश्वरी, एस. आर., स्टेट गवर्नमेन्टस इन अण्डिया, मैकमिलन, दिल्ली, 2000
12. आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक बने केजरीवाल, 'नव भारत, 26 नवंबर, 2002

■ ■ ■